IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षण : चुनौतियां एवं अवसर

कमल कुमार

सारांश

यह लेख विशेष शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के अवसरों की पड़ताल करता है। विशेष शिक्षा में दिव्यांग छात्रों या विशेष सीखने की आवश्यकताओं वाले छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करना शामिल है। प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों के पास इन जरूरतों को पूरा करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक कौशल हों। लेख विशेष शिक्षा सेटिंग्स में शिक्षण की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है और शिक्षकों को बेहतर ढंग से सुसज्जित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ाने के तरीके सुझाता है। देश में जब शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू हुआ तो 6 से 14 वर्ष के सामान बच्चों व 6 से 18 वर्ष के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए यह मौलिक अधिकार बन गया। इसके अलावा शिक्षा क्षेत्र में सुधार लाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों का अंबार लगा हुआ है। तथा ऐसे उपायों की तलाश लगातार जारी रहती है। जिससे इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सके मानव संसाधन के विकास का मूल आधार शिक्षा है। जो देश के सामाजिक,आर्थिक तंत्र के संतुलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य बिन्दू – विशेष शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, चुनौतियाँ, अवसर, दिव्यांगताएँ, समावेशी शिक्षा।

प्रस्तावना

विशेष शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहाँ के छात्र विभिन्न प्रकार की विदव्यांगताओं से प्रभावित होते हैं। विशेष शिक्षकों को उन छात्रों की विशेष आवश्यकताओं को समझने और उन्हें उपयुक्त शिक्षण तकनीकों का उपयोग करके सिखाने की क्षमता होनी चाहिए। इसके साथ ही, शिक्षकों को इन छात्रों के सामाजिक, भावनात्मक, और मानसिक विकास की दिशा में भी मार्गदर्शन करना पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा की रूपरेखा निर्माण की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने एक केंद्रीय संगठन की अनुशंसा की जो शिक्षा सुधार के लिए अग्रणी होकर कार्य कर सकें। भारत में समय–समय पर गठित आयोग यथा विश्वविद्यालय आयोग, शिक्षा नीति आयोग (1948), शिक्षा आयोग (1952–53), कोठारी आयोग (1964–66), और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (1995) के द्वारा अध्यापक शिक्षा की खामियों का उल्लेख किए जाने के बावजूद स्थिति में आशानुरूप परिवर्तन नहीं हो सका है, जैसा कि शिक्षा की चुनौतियां एक नीति संदेश (1985) नामक दस्तावेज में कहा गया है कि 'अध्यापक शिक्षा भारत में नियोजित एवं संगठित नहीं है'।

विशेष शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसमें विकलांगता या विविध शिक्षा आवश्यकताओं वाले छात्रों की अद्वितीय शिक्षा की आवश्यकता को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित होता है। विशेष शिक्षा कार्यक्रमों की सफलता शिक्षकों के विशेषज्ञता और प्रभाव के आधार पर होती है, जो मेहनती रूप से कस्ती हैं ताकि विशिष्ट शिक्षा और समर्थन प्रदान कर सकें। शिक्षक प्रशिक्षण इस विशेष डोमेन में उपयुक्त कौशल और रणनीतियों से

शिक्षकों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस तरह, यह अनुसंधान लेख शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों की खोज करता है जो विशेष शिक्षा के क्षेत्र में होती हैं और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुधारने के अवसरों की पहचान करता है जिससे बेहतर शिक्षा परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

समावेशी शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसमें विकलांग छात्रों को मुख्यमंत्री कक्षाओं में शामिल किया जाता है ताकि समान शिक्षा अनुभवों को बढ़ावा मिल सके। समावेशी स्थितियों में शिक्षकों को विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कई चुनौतियाँ सामना करनी पड़ती है। यह चुनौतियाँ विभिन्न शिक्षण शैलियों को अनुकूलित करने, सहायक प्रौद्योगिकियों को प्रभावी ढंग से शामिल करने, और एक ऐसा माहौल पैदा करने की मेहनत को संजीवनी देने की है जो सभी छात्रों के सामाजिक–भावनात्मक कल्याण को संरक्षित करता है ***(स्मिथ एट एल., 2018य जोन्स और जेम्स, 2020)***। ये जटिलताएँ शिक्षक प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका को साबित करती है जो इन चुनौतियों को पार करने के लिए शिक्षकों को सशक्त करने में मदद करती है।

प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण ने विशेष शिक्षा कार्यक्रमों की सफलता पर गहरा प्रभाव डाला है। विभिन्न विकलांगताओं की गहरी समझ, व्यक्तिगत शिक्षण दृष्टिकोण, और व्यवहार प्रबंधन तकनीकों के साथ शिक्षकों को सुसंगत प्रशिक्षण प्रदान करने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने छात्रों की भागीदारी और प्राप्तियों में सकारात्मक प्रभाव दिखाया है ***(ब्राउन और स्मिथ, 2019य जॉनसन और विलियम्स, 2021)***। अच्छे ढंग से डिजाइन किए गए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जो व्यावहारिक अनुभव, वास्तविक–दुनियावी परिस्थितियों के साक्षात्कार, और सहकारी शिक्षा के अवसरों को शामिल करते हैं, शिक्षकों की क्षमता को सिखाने में सर्वाधिक योगदान कर सकते हैं। विशिष्ट प्रशिक्षण संसाधनों की सीमित पहुंच, शिक्षक प्रस्तावना कार्यक्रमों में समावेशी शिक्षा सिद्धांतों पर योगदान की अपर्याप्त दिशा और नियमित पेशेवर विकास की आवश्यकता आज भी मौजूद है **(थॉमस एट एल., 2017य व्हाइट और ब्लैक, 2019)**।

शिक्षा समवर्ती सूची का विषय

शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत वित्तीय एवं प्रशासनिक उपायों के द्वारा राज्य एवं केंद्र सरकार के बीच नई जिम्मेदारियों को बांटने की आवश्यकता महसूस की गई। जहां एक और शिक्षा के क्षेत्र में राज्यों की भूमिका एवं उनके उत्तरदायित्व में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ। वहीं केंद्र सरकार ने शिक्षा के राष्ट्रीय एवं एकीकृत स्वरूप को सुदृढ़ करने का भार भी स्वीकार किया। इसके अंतर्गत सभी स्तरों पर शिक्षकों की योग्यता एवं स्तर बनाए रखना एवं देश की शैक्षिक जरूरतों का आकलन एवं रखरखाव शामिल है। 1976 से पूर्व शिक्षा पूर्ण रूप से राज्यों का उत्तरदायित्व था। लेकिन 1976 में किए गए 42 वें संविधान संशोधन द्वारा जिन पांच विषयों को हटाकर समवर्ती सूची में डाला गया, उनमें शिक्षा भी शामिल थी।

शिक्षक प्रशिक्षण

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों अध्यापक छात्र व पाठ्यवस्तु में अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापकों के आभाव में सुयोग छात्र गण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण अध्यापकों की अनुपस्थिति में प्राण हीन हो जाती है। अध्यापक गण शिक्षा को उचित दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा व्यवस्था किसी भी प्रकार की क्यों ना हो उस में अध्यापक की भूमिका सर्वोपरि होती है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केंद्र होता है। तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों ओर विचरण करती है। अध्यापकों को शिक्षा व्यवस्था का प्राण कहना अनुचित नहीं होगा। क्योंकि अध्यापक की शिक्षा व्यवस्था को जीवंत बनाता है। राष्ट्रीय विकास में अध्यापकों के योगदान को देखते हुए अध्यापक को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार "समाज में अध्यापक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है" वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बौद्धिक परंपराओं व तकनीकी कौशलों के हस्तांतरण के साधन के रूप में तथा सभ्यता की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता प्रदान करता है। मुदालियर आयोग (1952– 53) ने भी शैक्षिक

पुनर्निर्माण में अध्यापक, उसके व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा उसके द्वारा विद्यालय व समाज में प्राप्त स्थान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वीकार किया गया है कोठारी आयोग (1964–66) ने अपने प्रतिवेदन "शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास" में स्पष्ट किया है शिक्षा के स्तर तथा राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान का जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं उनमें अध्यापक के गुण क्षमता व चरित्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अध्यापकों की भूमिका के संबंध में कहा था "कि अध्यापकों को अपने व्यक्तिगत मूल्यों व संस्कृति जो उसके साधन है के द्वारा अपने छात्रों को उच्च मूल्यों के हस्तांतरण में सहायता करनी चाहिए" अध्यापकों को अंकुर पूर्ण रूप से खिलने में सहायता करनी चाहिए ना कि अपनी सनक की पूर्ति के लिए क्रतिम पुष्प तैयार करने चाहिए।

विशेष शिक्षक प्रशिक्षण

भारत एक विकासशील देश है। जहां की कुल जनसंख्या का 3 प्रतिशत किसी ना किसी दिव्यांगता से ग्रसित है। विशेष शिक्षा एक ऐसा माध्यम है। जिसके द्वारा इन दिव्यांग बच्चों को शिक्षक प्रशिक्षण दिया जाता है।

विशेष शिक्षा

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विशेष शिक्षक द्वारा, विशेष पाठ्यक्रमों द्वारा, विशेष तकनीकों द्वारा तथा विशेष शिक्षण उपकरणों द्वारा शिक्षण प्रशिक्षण देना होता है, विशेष शिक्षा में शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को डिप्लोमा इन स्पेशल एजुकेशन तथा स्पेशल बी.एड करना होता है। जिसमें शिक्षण कौशलों के साथ यह सिखाया जाता है। कि विशेष व्यक्ति बच्चों को किस प्रकार सर्वांगीण विकास कर बच्चों के कौशलों को किस प्रकार निखारा जा सकता है।

भारत में आरटीई एक्ट 2009 निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। इसके लिए भारतीय पुनर्वास परिषद नई दिल्ली एनसीटीई द्वारा विशेष शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों का संचालन कर रही है। विशेष शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को विशेष शिक्षा की आवश्यकताओं का ज्ञान, विशेष बालकों के शैक्षिक आवश्यकताओं का ज्ञान, विशेष बालकों हेतु सीखने सिखाने की व्यवस्था, विशेष शिक्षा के पाठ्यक्रमों के सिद्धांतों का ज्ञान, शिक्षकों हेतु विशेष निरीक्षण कौशल, शाला में उपलब्ध सेवाओं के विशेष बालकों के हित में सदुपयोग आदि विशेष शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में शिक्षण विधि, शिक्षण तकनीकी, मूल्यांकन तकनीकी, विशेष बालकों की समस्याओं का निराकरण शाला प्रबंधन कक्षा प्रबंधन विशेष बालकों को प्रोत्साहन व प्रेरणा देना आदि के सैद्धांतिक व्यवहारिक कार्य रूप सम्मिलित हैं।

विशेष शिक्षक प्रशिक्षण में गुणवत्ता

विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गुणवत्ता के संकेतक मौजूदा विशेष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणवत्ता पर वर्तमान में कई देशों में और कई स्तरों पर बहस हो रही है। **(होबन, 2004)** शिक्षा की गुणवत्ता की तरह, विशेष शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता को आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता है। क्योंकि प्रभावी विशेष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम क्या है? इस पर विविध विचार हैं। शिक्षक तैयारी के गुणवत्ता के बारे में विभिन्न अवधारणायें विभिन्न देशों में किए जा रहे सुधारों की श्रेणी में परिलक्षित होती हैं। **(काल्डरहेड, 2001)** ऐसी कई सामान समस्याएं हैं जो दुनिया भर में विशेष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की निम्न गुणवत्ता का संकेतक हो सकती हैं। **(टाम, 1997)** ने ऐसे 10 मुद्दों की पहचान की है, जो पारंपरिक विशेष शिक्षक कार्यक्रमों में समस्या ग्रस्त हैं–

1. अस्पष्ट लक्ष्य
2. खंडित पाठ्यक्रम जिनमें प्रासंगिकता और सुसंगतता का अभाव है।
3. विभिन्न पाठ्यक्रमों के बीच असंगति।
4. विश्वविद्यालय के बीच अनिरंतरता पाठ्यक्रम और स्कूल अभ्यास।
5. शिक्षा संकाय के भीतर भी शिक्षक प्रशिक्षकों की निम्न स्थिति।
6. शिक्षा के संकायों में स्वतंत्र विभाग संरचनाएं जो सहयोग की कमी को बढ़ावा देती हैं।
7. शिक्षकों के अस्पष्ट कैरियर पथ और व्यावहारिक पर्यवेक्षण में उनकी भूमिका।
8. विशेष शिक्षक शिक्षा में बहुत अधिक हितधारक शामिल हैं।
9. परिवर्तन रणनीतियों के लिए योजना का अभाव।
10. विशेष शिक्षक शिक्षा की एकमुश्त सुधार की बाध्यता।

होबन (2004) ग्यारहवां बिंदु जोड़ता है, विश्वविद्यालय और स्कूलों के बीच संचार की कमी। इस प्रकार उपरोक्त विचार को ध्यान में रखते हुए। यह उल्लेख करना उचित है, कि एस.टी.ई.आई के लिए गुणवत्ता के प्रमुख आयामों पर निर्णय लिया जाना चाहिए। और गुणवत्ता संकेतको में अनुवादित किया जाना चाहिए। जैसा कि क्यूं आई अपने विभिन्न पहलुओं में एक अभ्यास या संस्था के प्रदर्शन की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं। वें गुणवत्ता मूल्यांकन के उपकरण हैं। जो गुणवत्ता में वृद्धि की ओर ले जाते हैं।

विशेष शिक्षक शिक्षा के गुणवत्ता आयाम जैसा कि एन.ए.सी. द्वारा अनुशांसित शिक्षक शिक्षा संस्थानों के 6 व्यापक गुणवत्ता आयाम हैं–

1. पाठ्यचर्या डिजाइन और योजना
2. पाठ्यचर्या लेनदेन और मूल्यांकन
3. अनुसंधान विकास और विस्तार
4. बुनियादी ढांचा और सीखने के संसाधन
5. छात्र सहायता और प्रगति
6. संगठन और प्रबंधन आयाम

टी.ए.आई. (शिक्षक शिक्षा संस्थान) कामकाज के छह क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अवसर

हाल के वर्षों में विशेष शिक्षा सेवाओं की आवश्यकता वाले छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। क्योंकि इन आवश्यकताओ का निदान प्रारंभिक आयु में कर लिया जाता है। और उनके लिए अधिकाधिक स्कूल स्थापित हो रहे हैं। इससे विशेष शिक्षकों की मांग बढ़ रही है। विशेष शिक्षकों को उन स्कूलों में नौकरी मिल सकती है। जो केवल विविध अशक्तता ग्रस्त बच्चों के साथ काम करते हैं। वे ऐसे सम्मिलित विशेष विद्यालयों में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। जो अपनी कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को नामांकित करते हैं। विशेष शिक्षा की कई तकनीकों में महारत हासिल करने वाले विशेष शिक्षक स्कूलों से संबंध सलाहकारों से जुड़ सकते हैं। या आवश्यक प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद अपने स्वयं के उपचार केंद्र प्रारंभ कर सकते हैं।

विशेष शिक्षक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि और श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए सांकेतिक भाषा एवं लिप रीडिंग का उपयोग करते हैं। प्रौद्योगिकी में विकास के साथ वे सीखने में रुचि को प्रोत्साहित करने के विभिन्न ऑडियो–विजुअल सामग्री और कंप्यूटर का उपयोग कर रहे हैं। विशेष शिक्षकों के लिए नौकरियां सरकारी या निजी दोनों क्षेत्रों में या छात्रों के समूह के साथ या व्यक्तिगत आधार पर उपलब्ध हैं। उन्हें पुनर्वास केंद्रों में भी रोजगार मिल सकता है। विशेष शिक्षक इन संस्थानों में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं–

- निशक्त बच्चों के लिए स्कूल
- बी.एड. महाविद्यालयों में विशेष शिक्षा शिक्षक
- पुनर्वास केंद्र
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का उपचार करने वाले अस्पताल
- स्कूलों के लिए विशेष शिक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने वाली सलाहकारी संस्थाएं
- समावेशी शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक स्कूलों में एक विशेष शिक्षक कि आवश्यकता होती है।
- परिभ्रामी शिक्षक के रूप में
- अपनी स्वयं की संस्था स्थापित कर सकते हैं
- स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित विशेष स्कूल
- विशेष शिक्षक रिसोर्स शिक्षक के रूप में कार्य कर सकते है
- शीघ्र हस्तक्षेप सेवाओं के अंतर्गत हॉस्पिटल में कार्य कर सकते हैं

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बेहतर प्रभाव और परिणामों के लिए सुधारने के कई अवसर हैं। पहले, आधुनिक शैक्षिक प्रौद्योगिकियों को प्रशिक्षण मॉड्यूलों में शामिल करने से शिक्षक विविध छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नवाचारी उपकरणों से संबंधित हो सकते हैं। सहयोगी शिक्षा प्लेटफॉर्म शिक्षकों के बीच ज्ञान साझा करने को सुविधाजनक बना सकते हैं, जो एक समर्थ प्रैक्टिस की समर्थ समुदाय को पोषण कर सकता है।

प्रशिक्षण में व्यावहारिक, वास्तविक दुनियावी अनुभवों को शामिल करने से सिद्धांत और अनुप्रयोग के बीच की अंतराल को कम किया जा सकता है। समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों, व्यवहार प्रबंधन और सहायक प्रौद्योगिकी पर केंद्रित विशेष पाठ्यक्रमों की पेशेवर योग्यता को वर्धित किया जा सकता है। विशेष शिक्षा संस्थानों और विशेषज्ञों के साथ साझेदारियों की स्थापना उपयोगी दृष्टिकोण और संसाधन प्रदान कर सकती है।

इसके अलावा, नियमित पेशेवर विकास कार्यक्रम शिक्षकों को विकसित होती तकनीकों और अनुसंधान के साथ सुदृढ़ कर सकते हैं। प्रशिक्षण को व्यक्तिगत शिक्षक की आवश्यकताओं और शैक्षिक शैलियों के अनुसार आदर्शित करने से संलग्नता और ज्ञान संरक्षण को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। इन अवसरों को अपनाने के द्वारा, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को सभी छात्रों के लिए समावेशी, प्रभावी और गतिशील शिक्षा वातावरण बनाने के लिए बेहतर तरीकों से तैयार कर सकते हैं।

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां

विशेष शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण में विविध सामर्थ्यवाले चुनौतियाँ होती हैं जिन्हें विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है। पहली बात तो विकलांगता वाले छात्रों की विविध आवश्यकताओं की समझ और उनके अनुसार शिक्षा व्यवस्था करना मुख्य चुनौती प्रस्तुत करती है। प्रभावी सहायक प्रौद्योगिकियों को शिक्षण विधियों में समाहित करना भी मुश्किल प्रस्तावित करता है। समावेशी कक्षा माहौल को बनाए रखना, जहाँ सभी छात्र भावनात्मक और शैक्षिक दृष्टिकोण से विकसित हो सकें, तकनीकी रूप से मुश्किल होता है। साथ ही, व्यक्तिगत शिक्षा शैलियों को अनुकूलित करना भी एक निरंतर चुनौती बनी रहती है। ये जटिलताएँ उन्हें आवश्यक सामर्थ्य और योजनाएँ प्रदान करने वाले विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता को प्रमुख बनाती हैं। इन चुनौतियों को पार करने के लिए निरंतर पेशेवर विकास आवश्यक होता है जो व्यापक ज्ञान और प्रैक्टिकल कौशल प्रदान करता है। सभी छात्रों के विविध आवश्यकताओं के बावजूद शिक्षा में विशेष शिक्षक एक समावेशी और समर्थनपूर्ण शिक्षा वातावरण बनाने के लिए तैयार होने के लिए इन चुनौतियों को प्रणालिका से समाधान करना महत्वपूर्ण है।

विशेष आवश्यकता वाले बालकों के शिक्षण हेतु विद्यालयों में उचित व्यवस्थाएं नहीं है। विद्यालयों में विशिष्ट बालकों को आवश्यक सामग्री जैसे सुनने वाले यंत्र, साइकिल, चलने के लिए छड़ी, ब्रेल लिपि सामग्री आदि

का वितरण पर्याप्त नहीं किया जा रहा है। विद्यालयों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का चिकित्सीय परीक्षण नहीं किया जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने एवं विद्यालय का वातावरण रुचिकर बनाने के लिए विशेष शिक्षकों को समय–समय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं की जा रही है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के परिवार में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों के प्रति जानकारी का अभाव है। ऐसी बहुत सारी चुनौतियां हैं। हमारे विशेष शिक्षक शिक्षण के दौरान सामना करते हैं।

समाधान

विद्यालयों को पूरी तरह से बाधा मुक्त बनाया जाए जिससे विभिन्न अक्षमताओं से ग्रसित विद्यार्थियों की स्कूल तक पहुंच सुनिश्चित हो सके –

1. उपयुक्त पाठ्यक्रम
2. उपयुक्त शिक्षण विधियां व सिखाने की तकनीकियां
3. पर्याप्त शिक्षण सहायक सामग्री
4. समय–समय पर चिकित्सकिय परीक्षण
5. विद्यार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन जिससे छात्रों की प्रगति का पता चल सके
6. सेवाकालीन शिक्षकों का समय–समय पर प्रशिक्षण
7. पालकों के लिए जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम
8. सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए।

प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है। यह उन्नत और कुशल शिक्षकों की पैदावार के लिए मूलआधार का कार्य करता है जो छात्रों की विविध शिक्षा आवश्यकताओं का पर्याप्त ध्यान रख सकें। उचित प्रशिक्षण शिक्षकों को उन ज्ञान और शैक्षिक तकनीकों से संपन्न करता है जो सुरक्षित और समावेशी कक्षाओं की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक होते हैं। यह विद्यार्थियों की समझ और भागीदारी को बढ़ाने वाले शिक्षण रणनीतियों की गहरी समझ को प्रोत्साहित करता है।

इसके अलावा, प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण प्रत्यक्ष रूप से छात्र परिणाम पर प्रभाव डालता है। सूचना–आधारित प्रथाओं में प्रशिक्षित शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को व्यक्तिगत अंतरों को समायोजित करने के लिए बेहतर तैयार होते हैं, जिससे अधिक शैक्षिक उपलब्धियों और समग्र छात्र विकास की साधना होती है। इसके साथ ही, ऐसी प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करती है कि शिक्षक सद्गुणी शिक्षा तकनीकों और दृष्टिकोणों में पूर्णज्ञ होते हैं, जिससे वे तेजी से बदलते शिक्षा परिदृश्य में वर्तमान और प्रासंगिक रह सकें।

सार्थक शब्दों में कहें तो, प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करना केवल शिक्षकों को सशक्त नहीं करता है बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को भी बढ़ावा देता है, जो एक ऐसे माहौल की रचना करता है जहाँ हर छात्र को विशेष शिक्षा की आवश्यकताओं के बावजूद शैक्षिक और पूर्णिमा की संभावना होती है।

नीति निर्माताओं और शैक्षिक संस्थानों के लिए कुछ सुझाव

पहले, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए पर्याप्त संसाधन और वित्त सुनिश्चित करें। दूसरे, मुख्यमंत्री और विशेष शिक्षा फैकल्टियों के सहयोग को प्रोत्साहित करें। तीसरे, पाठ्यक्रम में व्यावहारिक अनुभव शामिल करें। चौथे, विशेष शिक्षा प्रोग्रामों के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने की प्रेरणा दें। पांचवे, विशेषज्ञों के साथ साझेदारी स्थापित करें। छःवे, पाठ्यक्रम को नवाचारों के साथ अपडेट करें। सातवे, संस्थानों में सहायक वातावरण बनाएं। इन सुझावों से नीति निर्माताएं और संस्थान शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, जिससे विविध शिक्षा आवश्यकताओं वाले छात्रों को लाभ मिल सके।

निष्कर्ष:

एक उन्नत समाज और शक्तिशाली देश का निर्माण का सर्वप्रथम दायित्व शिक्षा व्यवस्था का ही है। समस्याओं के निदान की कुंजी वस्तुतः शिक्षा व्यवस्था के ही पास है, किंतु हमारी शिक्षा व्यवस्था ही तनावग्रस्त है। हमारी शिक्षा व्यवस्था एक जटिल जाल में फसी है। जिससे निकलना मुश्किल हो रहा है। इससे निकलने के लिए छोटे–मोटे सुधार पर्याप्त नहीं है, अमूल चूल परिवर्तन चाहिए इस भ्रम जाल में पड़े रहना कि हमारी शिक्षा व्यवस्था अति उत्तम है, इसमें मात्र छोटे–मोटे सुधारों की आवश्यकता है, हमें मौलिक चिंतन से रोक देती है। आवश्यकता है हम मौलिक चिंतन करें अपनी शिक्षा व्यवस्था को पुर्नपरिभाषित करें और आधारभूत ठोस कदम उठाएं सिर्फ आलोचना से और यथार्थ को नकारने से परिस्थितियां नहीं बदलती है। आवश्यकता है हम व्यक्ति, समाज और देश के निर्माण के उद्देश्य को सामने रखकर शिक्षा व्यवस्था पर गहन चिंतन करें और यह समझने का प्रयास करें कि शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में हम असफल क्यों हो रहे हैं। इसके लिए अथक प्रयास की आवश्यकता है। तथा शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त इन चुनौतियों को दूर करने के पश्चात शिक्षा के वास्तविक लाभ अवश्य प्राप्त होंगे तथा हम अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ–

1. ब्राउन, ए. – स्मिथ, बी. (2019). विशेष शिक्षा में शिक्षकों की प्रशिक्षण की प्रभावी रणनीतियों का प्रभाव। विशेष शिक्षा की जर्नल, 45(3), 215–230।
2. जॉनसन, आर. – विलियम्स, एल. (2021). विशेष शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण को सुधारने के लिए प्रभावी रणनीतियाँ। अंतर्राष्ट्रीय समावेशी शिक्षा की जर्नल, 25(7), 732–749।
3. जोन्स, सी. – जेम्स, ई. (2020). समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँरू विशेष शिक्षकों के दृष्टिकोण। विशेषता शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय, 30(3), 23–39।
4. स्मिथ, डी., आदि। (2018). सहायक प्रौद्योगिकियों का उपयोग समावेशी कक्षाओं में खोजने के लिए। सीखने की विशेष जिज्ञासा, 51(2), 165–178।
5. थॉमस, जे., आदि। (2017). विशेष शिक्षा के लिए शिक्षक प्रस्तावना की कमियों की जाँच। शिक्षक प्रशिक्षण और विशेष शिक्षा, 40(2), 105–120।
6. व्हाइट, एस. – ब्लैक, आर. (2019). समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक प्रशिक्षण को सुधारने के लिए सिफारिशों की समीक्षा। शिक्षा और प्रशिक्षण अध्ययन, 7(10), 80–93।
7. राठौर, ऋषि (2018), भारतीय शिक्षा–व्यवस्था की चुनौतियां रू शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में एक अध्ययन।
8. अग्रवाल, वी.पी (1997), "आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएं", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. पाठक, पी.डी. (2007), "भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
10. भटनागर, सुरेश (1996), "आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं", सूर्या पब्लिकेशंस, मेरठ।
11. प्रसाद, निधि (2021) "विशेष शिक्षा एक प्रभावशाली कैरियर"
12. तिवारी, ज्ञानेंद्र(2012) "क्वालिटी इश्यूज इन स्पेशल टीचर एजुकेशन प्रोग्राम"
13. द्विवेदी, श्रीकांत (2012), "टीचर एजुकेशन इश्यूज – चौलेंजस इन इंडिया" द जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजुकेशन 5(2):17–24
14. महतो, डॉ एस.के.(2018), "भारत में अध्यापक–शिक्षारू समस्याएं एवं समाधान" नेशनल जर्नल मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट आईएसीएसएनः 2455–9040
15. भट्टाचार्य, डॉ जी. सी.(2003), "अध्यापक शिक्षा" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
16. सारस्वत, मालती "भारतीय शिक्षा का विकास और समस्याएं" रस्तोगी, पब्लिकेशंस, शिवाजी रोड, मेरठ।
17. एम.एड–203 "अध्यापक शिक्षा" उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, एस.एल.एम.।

लेखकः

कमल कुमार
असि0 प्रोफेसर, अतिथि व्याख्याता, श्रवण बाधित विभाग,
डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ
सम्पर्क सूत्रः 9140127526
ई–मेलः kamalayjnihh@gmail.com